परिचय

नानाजी देशमुख

मराठवाड़ा के परभणी ज़िलान्तर्गत कडोली गाँव हैं। हिंगोली तालुका के इस छोटे गाँव में अमृतराव देशमुख अपनी धर्मपत्नी राजाबाई, तीन पुत्रियों और एक पुत्र के साथ रहते थे। इस परिवार की सामाजिक प्रतिष्ठा मज़बूत थी परंतु आर्थिक हैसियत कमज़ोर। अक्षर ज्ञान से वंचित और लोकज्ञान में दक्ष इस दंपति के घर 11 अक्तूबर 1916 को एक पुत्र ने जन्म लिया। पाँचवीं संतान। नामकरण हुआ चंडिकादास। शैशवास्था में ही यह बालक अनाथ हो गया। बड़े भाई आबाजी देशमुख ने लालन-पालन किया। आसपास विद्यालय नहीं था। ग्यारह वर्ष की आयु तक अक्षर-ज्ञान से दूर इस बालक ने रिसोड़ नामक जगह पर पढ़ाई शुरू की। विद्यालय के शिक्षक चंडिकादास की मेधा से प्रभावित हुए। यहीं पढ़ाई के दौरान इनका परिचय संघ से हुआ। आठवीं कक्षा के पश्चात रिसोड़ छोड़कर वाशिम आना पड़ा। आश्रय मिला पारिवारिक परिचित पाठक परिवार में। इस परिवार के बच्चों की तरह चंडिकादास भी घर के काम-काज में हाथ बँटाते। धीरे-धीरे इस परिवार के विशिष्ट अंग बन गए। पाठक परिवार संघ से संबद्ध था। वाशिम में डॉ. हेडगेवार बहुधा आते थे। संपर्क बढ़ा। चंडिकादास और प्रभावित हुए तथा संघ-कार्य में रम गए। 1937 में मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण होने के बाद आगे की पढ़ाई के लिए बाहर जाना था, पर इसके लिए साधनाभाव था। पाठक परिवार के आबा पाठक और चंडिकादास ने तय किया कि शहर से फल-सब्ज़ी आदि ख़रीदकर थोड़ा मुनाफ़ा लेकर संपन्न परिवार में पहुँचाएँगे। इस तरीक़े से धन इकट्ठा होगा और आगे की पढ़ाई करेंगे। दोनों मित्र संघ कार्य के संग संग इसे करने लगे। दो वर्षों में इनके पास कुछ पैसे जमा हो गए। आगे की पढ़ाई के लिए वे राजस्थान के मिलानी ज़िला कालेज के लिए चले। साथ में और दो किशोर थे- बाबा सोनटक्के एवं बाजीराव देशमुख।

इन चारों मित्रों के लिए यह नई जगह थी। यहाँ इन्हें पढ़ाई करनी थी और साथ में संघ कार्य भी। चंडिकादास फुटबाल अच्छा खेलते थे। किसी को दु:खी देखकर सहायता के लिए तत्पर भी रहते थे। परिणामस्वरूप लोकप्रियता बढ़ी। दूसरों का कष्ट वे अपना बना लेते। उसे दूर करने की हर संभव कोशिश में प्राणपण से जुट जाते। परोपकार की यह वृत्ति पल्लवित-पुष्पित होने लगी। परिणामत: चंडिकादास को नया संबोधन मिला- नानाजी। जैसे नाना अपने बच्चों के लिए चिंतित रहता है। जो व्यक्ति दूसरों के संकट अपना बना लेता है और उससे जूझता है, बग़ैर किसी हित-कामना के, समाज भी उसे